



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (11-07-19)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा एवरहैपी और एवररेडी रहने वाले, ज्ञान योग से अपनी और सर्व की केयर और अनुभवों की शेयर करने वाले स्व-चित्तक, शुभ चित्तक, विश्व परिवर्तक महान आत्मायें, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अभी अगस्त मास में एक ओर संगमयुग के यादगार राखी और जन्माष्टमी के प्यारे त्योहार हैं तो दूसरी ओर हम सबकी अति प्यारी मीठी दादी प्रकाशमणि जी का स्मृति मास है। जैसे दादी को सदा सेवाओं का उमंग-उत्साह रहा, ऐसे उनके इस स्मृति मास में भी चारों ओर बहुत अच्छी उमंग-उत्साह भरी सेवायें होती हैं। सेवाओं के साथ-साथ हर एक स्वयं को भी सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने की तपस्या करते, दृढ़ता के संकल्प लेते हैं। बाबा कहते बच्चे, संगम का यह समय बहुत थोड़ा है, इसमें जो पुरुषार्थ करना है वह कर लो। संकल्प की शक्ति से सुख शान्ति आनंद प्रेम का वर्षा ले लो। अब तो हम सबको एवरहैपी के साथ-साथ एवररेडी भी रहना है, इसके लिए पुरुषार्थ में जरा भी बहाना नहीं देना चाहिए। सबसे पहले तो ज्ञान योग से अपनी केयर करनी है फिर अच्छे अच्छे अनुभवों की बातें आपस में शेयर भी करनी है, इससे बहुत सुख मिलता है। हर श्वास, हर सेकण्ड बाबा के साथ ही रहना है, इसमें चाहिए स्वयं में और एक बाबा में विश्वास और हिम्मत। थोड़ा भी देह-अभिमान वश कोई भी कर्म न हो। मैं आत्मा भले देह में हूँ पर देह से न्यारी, बाबा की प्यारी रहूँ, यही पुरुषार्थ करना और कराना है।

बाबा का प्यार ही हम बच्चों को उड़ा रहा है, बाबा का यह प्रेम साधारण नहीं है। बाबा के प्यार ने हमको बेफिकर बादशाह बना दिया है। भले यहाँ कइयों को कई प्रकार की प्रवृत्तियों में रहना पड़ता है, रहते भी हैं परन्तु अन्दर से बाबा, बाबा ही सदा याद रहता। बाबा अपना बनाके कितना प्यार से हमारी पालना कर रहे हैं। कोई भी बात सामने आती है तो हम कहेंगे मुश्किल कोई बात नहीं है। सदा ध्यान रहे कि इस अन्तिम शरीर में हमारी अन्त मती सो गति कैसी होगी! भले और कुछ पुरुषार्थ न कर सको सिर्फ दिलवाला बाप की दिल में बैठने का पुरुषार्थ करो और उसे अपनी दिल में बिठा लो तो दिल खुश हो जायेगी। बाबा के वरदानों से ही हम पल रहे हैं, बाबा की पालना ऐसी है जो कोई भी चिंता नहीं है, व्यर्थ चिंतन से भी बाबा ने फ्री कर दिया है। मेरे संकल्प समर्थ और श्रेष्ठ हैं तो सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है इसलिए संकल्प भी अच्छी क्वालिटी वाले चाहिए, क्वान्टिटी वाले नहीं, इसके लिए समझ से धीरज को अपनाओ और बाबा के महावाक्यों में अटल विश्वास रख अचल-अडोल बनो। कभी क्यों, क्या नहीं करना, सदा धैर्यवत रहना, मीठा बनके रहना क्योंकि मीठे बोल ही समय पर सहयोग देते हैं। ध्यान रहे मनमत, परमत नॉट एलाऊ। चलन और चेहरा फरिश्ते पन का अनुभव कराये। कहते हैं फरिश्तों के पांव धरती पर नहीं होते। सतयुग में हम भले अच्छे-अच्छे महलों में होंगे पर यहाँ यह भ्रुकुटी रूपी कुटिया में बैठ कितने खुश हैं! दाल-रोटी खाके प्रभू के गुण गाते हैं। बाबा कहते बच्चे, बीती बातों को भूल जाओ, आने वाली बातों को साक्षी होकर देखो, न्यारे और सबके प्यारे बनकर अच्छे से अच्छा पार्ट बजाओ। किसी के प्यार के पीछे लटको चटको नहीं। श्रीमत सदा सिरमाथे पर हो, इसमें एक्यूरेट रहो। सदा आठों शक्तियां काम करती रहें। सच्चाई की शक्ति हो तो सहनशक्ति और समेटने की शक्ति भी आ जायेगी। कभी कोई बातों के विस्तार में नहीं जाओ तब मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्षा पाने के हकदार बनेंगे। बाबा जहाँ बिठाये, जैसे चलाये, कराने वाला करा रहा है... कहता है बच्चे तुम शान्त रहो मैं बैठा हूँ।

बोलो, हमारे मीठे-मीठे भाई बहिनें यही भान आता है ना! अच्छा-सभी को बहुत-बहत याद..

ईश्वरीय सेवा में,
बी. के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



“पवित्रता ब्राह्मण जीवन की रॉयल्टी और पर्सनैलिटी”

- 1) संगमयुगी ब्राह्मण जीवन की विशेषता पवित्रता है। प्रवृत्ति में रहते अपवित्रता से निवृत्त रहना, स्वप्न मात्र भी अपवित्रता के संकल्प से मुक्त रहना - यही विश्व को चैलेन्ज करने का साधन है, यही आप ब्राह्मणों की रूहानी रॉयल्टी और पर्सनैलिटी है।
- 2) प्युरिटी की रॉयल्टी अर्थात् एकव्रता बनना, (एक बाबा दूसरा न कोई) इस ब्राह्मण जीवन में सम्पूर्ण पावन बनने के लिए एकव्रता का पाठ पक्का कर लो। वृत्ति में शुभ भावना, शुभ कामना हो, दृष्टि द्वारा हर एक को आत्मिक रूप में वा फरिश्ता रूप में देखो। कर्म द्वारा हर आत्मा को सुख दो और सुख लो। कोई दुःख दे, गाली दे, इनसल्ट करे तो आप सहनशील देवी, सहनशील देव बन जाओ।
- 3) पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, वह तो फाउण्डेशन है लेकिन साथ में और चार भी हैं। क्रोध और सभी साथी जो हैं, उन महाभूतों का त्याग, साथ-साथ उनके भी जो बाल बच्चे छोटे-छोटे अंश मात्र, वंश मात्र हैं उनका भी त्याग करो तब कहेंगे प्योरिटी की रूहानी रॉयल्टी धारण की है।
- 4) पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा श्रृंगार है, सम्पूर्ण पवित्रता आपके जीवन की सबसे बड़े से बड़ी प्रापटी है, रॉयल्टी और पर्सनैलिटी है। इसे धारण कर एवररेडी बनो तो प्रकृति अपना काम शुरू करे।
- 5) ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है - सदा प्युरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी में रहना। यही प्युरिटी की पर्सनैलिटी विश्व की आत्माओं को अपनी तरफ आकर्षित करेगी, और यही प्युरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी में रॉयल्टी देने से छुड़ायेगी। इसी रॉयल्टी के अनुसार भविष्य रॉयल फैमिली में आ सकेंगे। जैसे शरीर की पर्सनैलिटी देह-भान में लाती है, ऐसे प्युरिटी की पर्सनैलिटी देही-अभिमानी बनाए बाप के समीप लाती है।
- 6) जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वास चलना आवश्यक है। श्वास नहीं तो जीवन नहीं, ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वास है पवित्रता। 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार पवित्रता है। आत्मा और परमात्मा के मिलन का आधार पवित्र बुद्धि है। संगमयुगी प्राप्तियों का आधार और भविष्य में पूज्य-पद पाने का आधार पवित्रता है। इसलिए पवित्रता की पर्सनैलिटी को वरदान रूप में धारण करो।
- 7) यदि वरदाता और वरदानी दोनों का सम्बन्ध समीप और स्नेह के आधार से निरन्तर हो और सदा कम्बाइन्ड रूप में रहो तो पवित्रता की छत्रछाया स्वतः रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिवान बाप है

वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। जब अकेले होते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है।

8) ब्राह्मणों की लाइफ, जीवन का जीय-दान पवित्रता है। आदि-अनादि स्वरूप ही पवित्रता है। जब स्मृति आ गई कि मैं आदि-अनादि पवित्र आत्मा हूँ। स्मृति आना अर्थात् पवित्रता की समर्थी आना। स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप आत्मायें निजी पवित्र संस्कार वाली हैं। तो निजी संस्कारों को इमर्ज कर इस पवित्रता की पर्सनैलिटी को धारण करो।

9) पवित्रता ब्राह्मण जीवन के विशेष जन्म की विशेषता है। पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आंखों की रोशनी है, पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। ऐसी महान चीज़ को अपनाते में मेहनत नहीं करो, हठ से नहीं अपनाओ। यह पवित्रता तो आपके जीवन का वरदान है।

10) आपका स्व-स्वरूप पवित्र है, स्वधर्म अर्थात् आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है। स्वदेश पवित्र देश है। स्वराज्य पवित्र राज्य है। स्व का यादगार परम पवित्र पूज्य है। कर्मन्द्रियों का अनादि स्वभाव सुकर्म है, बस यही सदा स्मृति में रखो तो मेहनत और हठ से छूट जायेंगे।

11) पवित्रता की शक्ति परमपूज्य बनाती है। पवित्रता की शक्ति से इस पतित दुनिया को परिवर्तन करते हो। पवित्रता की शक्ति विकारों की अग्नि में जलती हुई आत्माओं को शीतल बना देती है। आत्मा को अनेक जन्मों के विकर्मों के बन्धन से छुड़ा देती है। पवित्रता के आधार पर द्वापर से यह सृष्टि कुछ न कुछ थमी हुई है। इसके महत्व को जानकर पवित्रता के लाइट का क्राउन धारण कर लो।

12) वर्तमान समय के प्रमाण फरिश्ते-पन की सम्पन्न स्टेज के वा बाप समान स्टेज के समीप आ रहे हो, उसी प्रमाण पवित्रता की परिभाषा भी अति सूक्ष्म होती जाती है। सिर्फ ब्रह्मचारी बनना ही पवित्रता नहीं लेकिन ब्रह्मचारी के साथ ब्रह्मा बाप के हर कर्म रूपी कदम पे कदम रखने वाले, ब्रह्मचारी बनो।

13) पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है। जहाँ पवित्रता है वहाँ दुःख अशान्ति आ नहीं सकती। तो चेक करो सदा सुख की शैथ्या पर आराम से अर्थात् शान्त स्वरूप में विराजमान रहते हैं? अन्दर क्यों, क्या और कैसे की उलझन होती है या इस उलझन से परे सुख स्वरूप स्थिति रहती है?

14) जो प्युरिटी की पर्सनैलिटी से सम्पन्न रॉयल आत्मायें हैं उन्हें सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनका बोलना, देखना, चलना, खाना-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म से सभ्यता और सत्यता दिखाई देती है।

15) रूहानी रॉयल्टी का फाउण्डेशन सम्पूर्ण पवित्रता है। तो अपने से पूछो कि रूहानी रॉयल्टी की झलक और फलक आपके रूप वा चरित्र से हर एक को अनुभव होती है? नॉलेज के दर्पण में अपने को देखो कि मेरे चेहरे पर, चलन में वह रूहानी रॉयल्टी दिखाई देती है या साधारण चलन और चेहरा दिखाई देता है?

16) जैसे दुनिया की रॉयल आत्मायें कभी छोटी-छोटी बातों में, छोटी चीजों में अपनी बुद्धि वा समय नहीं देती, देखते भी नहीं देखती, सुनते भी नहीं सुनती, ऐसे आप रूहानी रॉयल आत्मायें किसी भी आत्मा की छोटी-छोटी बातों में, जो रॉयल नहीं हैं उनमें अपनी बुद्धि वा समय नहीं दे सकते। रूहानी रॉयल आत्माओं के मुख से कभी व्यर्थ वा साधारण बोल भी नहीं निकल सकते। उनका हर बोल युक्तियुक्त, व्यक्त भाव से परे अव्यक्त भाव और भावना वाला होगा। तो अब ऐसी रूहानी रॉयल्टी और प्योरिटी की पर्सनैलिटी धारण करो तब प्रत्यक्षता होगी।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

09-02-15

मधुबन

“त्याग तपस्या ऐसी हो जो बाबा सेवा में मुझे यूज करे, त्याग वृत्ति है तो तपस्या कर सकते हैं”

दादी जानकी जी

त्याग दिल से होता है, योग बुद्धि से होता है। देह सहित देह के सब सम्बन्ध, स्वभाव, संस्कार को छोड़, इन्हें भूल। मिलनसार बनने के लिए ज्ञान चाहिए। पहले दिल में महसूसता चाहिए तो त्याग हो जाता है। टाइम नहीं लगता है, फिर तपस्या अर्थात् एक बाबा दूसरा न कोई। किसी ने पूछा आप बाबा से शक्ति खींचने के लिए क्या करती हो? बाबा से शक्ति खींचने के लिए देही-अभिमानि स्थिति पर अटेंशन हो। जैसे मैं कहती हूँ त्याग, तपस्या, सेवा परन्तु कोई कोई में त्याग वृत्ति नहीं है, तपस्वी मूर्त नहीं हैं, सिर्फ सेवाधारी हैं। सेवा की लगन बहुत है, सेवा, सेवा, सेवा.. प्लीज़, सेवा के साथ बुद्धियोग बाबा के साथ रखेंगे तो बल मिलेगा। उसमें भी सेवा के बल से फल अच्छा मिलता है। त्याग से वृत्ति और स्वरूप की स्मृति शुद्ध होती जाती है। सेवा में भावना होती है उसमें भागदौड़ करेंगे पर तपस्या में भागदौड़ नहीं है। वातावरण, वायुमण्डल और वायुब्रेशन ज्ञान और योग से युक्त होंगे और योगबल से बोलना थोड़ा कम और अच्छा होगा। अन्दर से त्याग वृत्ति है तो तपस्या कर सकते हैं, कोई प्रॉब्लम नहीं है। परन्तु जिसका त्याग पहला है तो उसकी तपस्या अच्छी है, सेवा ऑटोमेटिक है।

मैं बाबा को यूज नहीं करती हूँ, बाबा मुझे यूज करता है। वन्दर तो यह है, अपने आप जैसा समय वैसे बाबा मेरे को यूज करता है, मैं यूज नहीं करती हूँ। मेरे में शक्ति वा इतना मनोबल कहाँ से आता है? तो मैं कहूँगी ओम् शान्ति से। मेरा श्वास नहीं भी चलता होगा, पर ओम् शान्ति कहेंगी तो उमंग-उत्साह, हिम्मत नेचुरल मदद मिलती है। बाकी भी सारे दिन में ऐसे काम नहीं करें जो किसी के आगे सॉरी कहना पड़े, मैं कभी सॉरी नहीं करती हूँ।

ऐसा काम करो ही नहीं ना! सारी (साड़ी) की लाज़ रखो। अपने अन्दर अपनी स्थिति को मजबूत बनाना चाहिए क्योंकि समय अनुसार बाबा जैसी स्थिति चाहते हैं वैसी नहीं है। भले ही हम सेवा कितनी भी कर रहे हों, क्लास करा सकते हैं, कोर्स भी करा सकते हैं परन्तु मेरे में इतनी ताकत नहीं है जो मैं अच्छी तरह से लम्बा बोलूँ, पर काम लायक तो बोलूँ, जो जरूरी हो वो बोलूँ, यह मिस नहीं करें। कोई क्लास में लेट आवे वो साकार में बाबा को अच्छा नहीं लगता था। अभी तो समय अनुसार वो अलग बात हो गई है, बाकी बाबा का बोलना ऐसा इशारे से होता था तो उसमें बहुत समझानी मिल जाती थी।

महावीर वो जो कैसी भी परीक्षा आये, सामना कर लेवे। महावीर जो होगा वो एक्यूरेट, एवररेडी, आलराउण्डर होगा। महारथी वो जो सम्भाल के बोलेंगे क्योंकि मैं जो करूँगी मुझे देख और करेंगे। एक तो मैं ऐसे कर्म करूँ जो मेरी दिल साफ, हिम्मत बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राजी, नियत साफ मुराद हांसिल। मेरी भावना अच्छी है तो फिर जो संकल्प किया वो साकार हो जायेगा, तो यह ध्यान रखने से बहुत अच्छा। भावना अच्छी है तो कोई बहाना नहीं देंगे। नहीं तो अन्दर बहाना बनाके बतायेंगे मेरे पेट में दर्द है, मेरे को टाइम नहीं है, मेरे को यह है... ऐसे बहाना बनायेंगे। शिव शक्ति के सामने कोई ऐसी बात आयेगी, चली जायेगी, ठहरेगी नहीं क्योंकि वो बहादुर है, महावीर है, उनके सामने उसकी इज्जत ऑनर है, जो बात सामने आये चली जाये। वो जरा भी उसके फेस पर नहीं आयेगा। फेस चेंज नहीं होगा। महावीर जो होगा वो न्यारा होगा, पर महारथी को कभी थोड़ा बहुत इफेक्ट आया तो घोड़ेसवार बनना यह लाइफ के लिए

अच्छा नहीं है। कभी भी घोड़ेसवार की स्थिति आई, भले गई भी परन्तु सूक्ष्म दाग लग गया। सफेद कपड़े में थोड़ा भी दाग लग जाए, शोभा नहीं है। तो साड़ी की लाज़ रखनी है। अभी ऐसा पुरुषार्थ करना चाहिए जो धर्मराज आँख न दिखाये इसके लिए केयरलेस नहीं हो, लेजीनेस नहीं हो। सुस्ती वा किसी भी कारण से मैं थोड़ा एवाइड करेगी तो यह राँग हो जायेगा।

हरेक के साथ पार्ट बजाते ड्रा मा, याद में बा बा। ड्रामा में हरेक का अपना पार्ट है। ड्रामा में जो बीती सो बीती और जो होगा सो अच्छा होगा। प्रेजेंट में मुझे प्रेजेंट रहना है, तो प्रेजेन्ट में प्रेजेन्ट रहने से, बीती बात को रिपीट न करने से ड्रामा का ज्ञान अच्छा यूज़ होता है। तुमको यह नहीं करना चाहिए, तुमको यह... यह संकल्प न चलें। जैसे मैं कभी किसी को कहती हूँ, तुमको यह नहीं करना चाहिए.. पर ऐसे नहीं कहती हूँ तुमको ऐसे नहीं करना चाहिए.. तो ऐसे ट्यूनिंग में तेज आवाज़ नहीं होना चाहिए। इसमें बुद्धि स्थिर हो। ड्रामा ठीक है।

पुरुषार्थ की लगन चाहिए तो पुरुषार्थ ऑटोमेटिक साथ देता है। सदा पुरुषार्थ की अच्छी-अच्छी बातें इमर्ज होती हैं तो

संशय नहीं आता है। अपने में शक्य नहीं होता है, पर यह होवे तो अच्छा है, यानी ऐसी परीक्षाये तो आयेंगी, आती हैं पर मैं परीक्षा भी नहीं समझेगी। सतयुग में मैं गोल्डन एज में आऊँ यह लगन को बढ़ाना है। उसमें सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। समझा। भावना ऐसी हो जो दूसरों में भी ऐसा परिवर्तन आ जाये।

मुझे बाबा से आप सबसे प्यार मिलता है ना, इसलिए तो मैं भी आप सबको इतना प्यार करती हूँ। ताली दो हाथ से बजती है, एक हाथ से नहीं बजती है। तो ताली बजाने में खुशी होती है ना। आज मैंने दोपहर को न सो करके आप सबके बर्थ डे कार्ड देखे, पढ़े बहुत अच्छा लगा। बाबा के बाद प्रकाशमणी दादी ने ही सारा यज्ञ सम्भाला, अभी मैं क्या करेगी! यज्ञ को देख करके सब अपने आप सहयोग देते हैं। यज्ञ में क्या खाना बनता है? कभी भण्डारे वालों को बुलाके टोली खिलवाती हूँ।

तो ड्रामा को स्मृति में रखना माना बाबा को याद करना। यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ, यह नहीं होगा, ऐसी भाषा बाबा की याद भी नहीं दिलाती है। समझा। ओ.के.।

दूसरा क्लास

“बाबा को साथी बनाकर साक्षी होकर पार्ट प्ले करते चलो तो सदा बेफिक्र रहेंगे”

बाबा साकार में होते हुए अव्यक्त और न्यारा रहा, तो मुझे भी शरीर में होते अपनी स्थिति को अच्छा बनाके रखना है। आप सबसे भी मैं यही कहना चाहती हूँ कि सेवा के कारण न रोब दिखाओ, न कोई कमजोरी हो, न कोई बोझा महसूस हो, भारीपन न हो। बाबा को अच्छे वो लगते हैं जो किसी बातों में नहीं आते हैं। जैसे हमारे पास ईशू दादी है, ईशू दादी में बाबा का बहुत विश्वास था। कभी किसी से बात करता हुआ नहीं देखा होगा। बड़ी गम्भीर और सदा शान्त चित्त रहती है, अभी थोड़ा तबियत ठीक नहीं रहती है तो भी कैसे भी करके एकाउण्ट ऑफिस में एक घण्टा आ करके गोलक के साथ बैठती है। पता सब रखती है लेकिन कभी यह नहीं कहेगी, मेरे से पूछा नहीं। रमेश भाई को भी पता है ईशू मालिक है पर रमेश भाई वा गोलक को कहेंगी नहीं, यह तू क्यों करता है? बात करने में बहुत-बहुत ध्यान रखती है। तो बाबा को चाहिए ऐसे बच्चे जो बात कम करें। निष्काम सेवा और निस्वार्थ सेवाधारी, तब तो जो सेवा सामने आई वो सफल हो गई। सारी लाइफ सेवा में अथक भावना रही इसलिए एक समय था, एक पेनी भी हाथ में नहीं था पर फिर भी सेवा हुई ना क्योंकि ईश्वरीय सेवा है, इसलिए यह अच्छा हुआ है,

हो रहा है, होता रहेगा। मैं तो यही भावना से चली हूँ, होता आ रहा है। यहाँ भी (U.K. की) सारी कारोबार बहुत अच्छी चल रही है। हरेक अपनी-अपनी सेवा अच्छी कर रहा है। सभी अच्छे हैण्ड्स हैं तब तो इतना कारोबार सम्भाल रहे हैं। सब अपनी अपनी ड्यूटी पर एक्क्यूरेट चल रहे हैं। बाकी मैं खुश हूँ, राजी हूँ, सत् चित्त आनन्द स्वरूप हूँ। समझा।

चित्त में स्मृति होती है, स्मृति में सदा ही बाबा मेरा साथी है और साक्षी होके पार्ट प्ले करने का ज्ञान देता है। जैसे यह शब्द बाबा मेरा साथी है, सचमुच बहुत वन्डरफुल साथी है। बाबा सदा साथ है इसलिए मुझे कोई फिकर नहीं है, मुझे कल क्या करना है, अपने आप अमृतवेले आँख खुल जायेगी, तो यह वन्डर है ना। तो हमारा साथी बाबा है परन्तु जैसा शरीर है तो ऐसे उसी अनुसार सेवा की मीसिंग न हो, मैं सदा सेवा पर हाज़िर हो सकूँ, उसमें मैं कहेगी बाबा की कमाल है। कभी तो ऐसे लगता है जैसेकि मैं बाबा की बेटी है, मुझ बेबी को बाबा डॉ. चला रहा है इसलिए कोई फिकर नहीं। यज्ञ सेवा करने के लिए जैसे ईशू को बाबा ने रखा है। बाबा के दिनों में तो यज्ञ में 300-400 लोग थे, अभी मधुवन में हजारों हैं, करोड़ों का खर्चा है। टूकें भर-भरके अनाज

आता रहता है परन्तु जो निमित्त बने हुए हैं, हमारा वल्लभ वन्दरफुल है। इतनी निर्मानता में रहता है, जरा भी दिखावा नहीं है परन्तु उसकी भावना और प्यार से अनाज की ट्रकें भर-भर करके ऐसे आती हैं, कोई कमी नहीं है। घी, तेल, शक्कर, नमक... पता भी नहीं पर सब अच्छा है। 20-25 हजार का खाना बनता है, 2-3 बारी चाय पानी, योग के पहले चाय, योग के बाद भी चाय, फिर नाश्ते के बाद चाय, फिर शाम को भी चाय के साथ टोली भी रोज मिलती है। साकार बाबा के दिनों की सिस्टम अभी तक चालू है। हमारा सूर्य भाई भण्डारी बहुत पुराना अच्छे ते अच्छा लेखक भी है, स्पीकर भी है तो भण्डारी का मुख्य भी है। वैसे ही आत्मप्रकाश टोली वाला वन्दरफुल है। जब भी मिलेगा कहेगा मैं आपको टोली लाके देता हूँ। ऐसे सेवाधारी किसको कहा जाता है, मधुबन से सीखें। यहाँ भी देखो ऐसे ही सब कर रहे हैं, हर सेवा में सब सदा

हाँ जी करते रहते हैं, कभी ना नहीं करते हैं। बाकी मुझे योग कराओ नहीं पर योगयुक्त रहो। जहाँ आप हाज़िर हो वहाँ वातावरण योग का, रूहानी स्नेह का ऐसा हो जो एक दो को देख खुश होते रहें।

विदेश की सेवायें कैसे हुई हैं, ड्रामा में नूँधा हुआ था, बाबा की प्रेरणायें थी, हम लोग निमित्त बनें। पता था क्या आप सब निकलेंगे। पर दादा राम सावित्री निमित्त बने हाँगाँग की सेवा के।

तो मैं सभी को कहती हूँ - निश्चित रहो, मीठे रहो, सत्यता, पवित्रता, धैर्यता, नम्रता, मधुरता यह पाँच बातें आप सबकी लाइफ में हों। जल्दी-जल्दी बोलचाल में नहीं आओ। सतयुग में तो नेचुरल होगा, पर यहाँ जो होगा ना वह 21 जन्म के लिए ऐसा बनने की राजाई मिलेगी। अच्छा।

तीसरा क्लास

“ज्ञान धन है, ज्ञान खुराक है, यही खुराक खाते खिलाते रहो, भोजन जो भी खाते हो उसका भोग जरूर लगाओ”

सभी मिलकर बोलो मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा, शुक्रिया बाबा। अभी मुझे खुली दिल से जो कुछ कहना है मैं कह दूँगी। मैं देखती हूँ आप सभी अपनी खुशी से, बाबा की शक्ति से और ईश्वरीय परिवार के प्यार से अच्छी जीवन बना रहे हो क्योंकि दिल खुश, बाबा खुश।

भोग लगाने की सिस्टम ब्रह्माबाबा ने बनाई, पहले नहीं थी। लखनऊ की किसी आत्मा ने अचानक शरीर छोड़ा तभी बाबा को प्रेरणा आई, बाबा ने कहा इसका भोग लगाओ। उस समय सन्देशी थी मम्मा की माँ, वन्दरफुल थी। तभी गुल्ज़ार दादी भी सन्देशी थी, कमलसुन्दरी भी थी, पर मम्मा की माँ ने जब सन्देशी बनकर भोग लगाया तो वह उस आत्मा से मिली। बाबा की प्रेरणा थी उसको बाबा के पास लेके आई, तो कुछ आत्माओं का बाबा को बहुत ख्याल है, तब से ले करके मैं सन्देशी नहीं हूँ, परन्तु जो सन्देश आता है उसके लिए रिगार्ड है।

आप जो कुछ करते हो प्रैक्टिकल लाइफ में भगवान का साथ मिलता है। साथ मिलने से फिर ड्रामा में जो पार्ट है वह साक्षी होकर प्ले करता है। यह क्यों, क्या, कैसे... असुल अन्दर से आवाज़ न निकले। कभी भी यह बात ठीक नहीं है, ठीक हो जायेगी। हमारी वृत्ति दृष्टि से सब ठीक है तो ठीक हो जायेगा। देरी नहीं लगेगी।

जो मैंने लेटेस्ट बात सुनाई है - पवित्रता, सत्यता, धैर्यता। कई

भाई बहनों में थोड़ा धीरज की कमी है क्योंकि सत्यता की शक्ति जमा नहीं है। नम्रता का गुण भी बहुत अच्छा है, देह-अभिमान खत्म कर देता है। कुछ भी हो जाए तो भी मधुरता साथ रहे, मीठी वाणी बोल, मिठरा मीठी वाणी बोल। कभी अलबेलापन या थकावट ना रहे, बाबा करा रहा है, शक्ति दे रहा है। समय भी सिखा रहा है। मुझे यह पता थोड़ेही था मैं भी कोई दादी बनेंगी, या मैं दादी बनूँ जरा भी कोई ख्याल नहीं था। मुझे दादी बनने का भी संकल्प नहीं था परन्तु दादी का महत्व बाबा मम्मा समान हो। जैसे मम्मा बाबा, जैसा कर्म मैं करूँगी मुझे देख और करें। कर्म पर बहुत ध्यान। मुख पर, कानों पर, दृष्टि, वृत्ति, स्मृति पर सदा ध्यान रहे।

दृष्टि का आधार है पहले वृत्ति। वृत्ति में वही बात रहती है जो स्मृति में होती है। तो स्मृति में सदा रहना, सिमर सिमर सिमर सुख पाओ, कलह कलेश तन माय मिटाओ। ज्ञान का सिमरण बहुत अच्छा है। जो भी मुरली की प्वाइन्ट्स पढ़ी हैं या सुनी फिर उसे सिमरण में लावें तो समय सफल होता है। ज्ञान सिर्फ सुनने या सुनाने के लिए नहीं है पर वह हमारे मन कर्मेन्द्रियों द्वारा यूज़ होता है।

बाकी जब क्लास में आते हो, तो प्लीज़ काले कपड़े नहीं पहनो। ठण्डी में भी सबको सफेद होंगे, परन्तु काले कपड़े पहनके क्लास में बैठना अच्छा नहीं लगता है क्योंकि सभी अच्छे हैं। भोग

में सभी को केला मिला तो खाओ केला, अकेले आये थे अकेले जाना है, पर कर्म ऐसा करें नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा, निष्काम सेवा नष्टोमोहा। जरा भी मोह न हो। कोई स्वभाव के वश न हो। भाव समझा पर स्वभाव भी ऐसा हो। हरेक की भावना ऐसी हो। बुद्धि शुद्ध, शान्त रहे। सेवा अर्थ या कोई भी अच्छे कार्य अर्थ संकल्प कोई आवे तो वो साकार हो जाए, हो जायेगा। कभी होगा, क्या होगा? कोई मदद नहीं करता... ऐसी भाषा न हो।

बाबा ने इतना ज्ञान धन दिया है। ज्ञान धन भी है, ज्ञान खुराक भी है। जो बाबा ने किया है कराया है वही करना है। मैं पूछती हूँ रोज़ भोग कौन लगाता है? यह एक रिगार्ड है बाबा को खिलाके फिर खाना। यह जो गीत है ना – बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है। एक इलाही बेहद है, दूसरा अल्लाह के तरफ से डायरेक्ट सुख मिलता है। अल्लाह ने सुख का भण्डारा भरपूर कर दिया, दुःख का नाम निशान नहीं। कभी दुःख क्या होता है, वह अनुभव ही नहीं है। यह जरूर प्रैक्टिस करो, कोई समय शान्त में बैठने का, आँखें खुली रहें, बुद्धि इधर उधर न जाये। बाबा सामने बैठा है या मैं बाबा के सामने बैठी हूँ। अन्दर की इतनी मीठी शान्ति ऐसे पैदा होती है, जो समझते हैं शान्ति मेरा धर्म है, धरत परिए धर्म न

छोड़िए। कैसी भी बातें आयें, बात, बात हो जायेगी बाबा, बाबा है। यहाँ है बाप, यहाँ है बात। तो बात कुछ भी न हो, बाबा बैठा है, ऐसा हमेशा अन्दर का आवाज़ निकलने से और कोई आवाज़ नहीं निकलता है।

किसी ने पूछा अगर मुझे फरिश्ता बनना हो तो मैं क्या करूँ? मैंने कहा पहले ब्राह्मण किसको कहा जाता है वो लाइफ में दिखाओ। ब्राह्मण लाइफ ऐसी हो जैसा ब्रह्मा का मुख, वैसे बच्चे का मुख। ब्रह्मा मुख की सन्तान हैं तो लगे कि इसने ब्रह्मा भोजन खाया है। तो ब्राह्मणों के गुण जो हमारे बाबा में थे वो सब हमारे में नेचुरल हों। तो अन्दर ही अन्दर ब्रह्माबाबा जैसी अपनी जीवन बनाओ। अगर ब्रह्माबाबा को फॉलो नहीं करेंगे तो शिवबाबा भी याद नहीं आयेगा। निराकारी, रूखा सूखा नहीं बनना है, निराकारी स्थिति हो, साकार में सम्बन्ध की, स्नेह की भासना, नष्टोमोहा, अनासक्त वृत्ति हो। हम कहाँ भी रहते हों पर सूक्ष्म वायब्रेशन पहुंचते हैं ना। भले आज मैं यहाँ हूँ कल मधुबन होंगी। अभी सबसे मिलने के लिए छुट्टी लेने के लिए बुलाया है। तो छुट्टी ऐसे नहीं लेती हूँ पर साथ हम रहे थे, यह याद रहे। ओम् शान्ति।

“हृद की मैं और मेरे पन की पूँछ को जब आग लगे तब लंका का परिवर्तन हो”

(गुल्जार दादी जी का क्लास)

हम सभी बाबा के लाडले हैं। बाबा तो कहते हैं यह मेरे सेवा के साथी हैं, जो सेवा के साथी हैं वो सदा समीप रहते हैं। आजकल बाबा की बच्चों के प्रति जो भी शुभ आशायें हैं, उन्हें पूरा करने का उमंग हर एक के मन में आता है, इसके लिए हर एक प्लैन भी बनाते हैं। संकल्प भी करते हैं। लेकिन प्लैन को प्रैक्टिकल लाने में अन्तर हो जाता है। जितना चाहते हैं उतना नहीं होता है। उसका कारण क्या है?

इसके लिए तीन बातें हमें अपने जीवन में नोट करनी चाहिए तभी हम बाबा की आशा पूरी कर सकते हैं। बाबा जब होमवर्क देते हैं तो थोड़ा टाइम उमंग फुल रहता है, अटेन्शन भी रहता है पीछे कारोबार में जाने से, जब हम एक दो के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं तो उसमें चलते-चलते अटेन्शन ढीला हो जाता है। हमने अनुभव किया है – देह-अभिमान जो 63 जन्म रहा है, तो जब किसी बात में मेरा नाम आता है तो हम दूसरों को आगे कर देते हैं कि वह भी ऐसे करता है। हम अपनी गलती महसूस करें उसमें परसेन्टेज़ हो जाती है। मानो कोई कहता है कि मेरी गलती नहीं है, लेकिन अगर इशारा मिलता है तो मम्मा कहती थी उसे सम्भालकर रखना चाहिए क्योंकि आगे के लिए वह काम आ

सकती है। इसमें मूल बाबा ने दो शब्द कहे हैं - हृद की मैं और मेरा, ये दो शब्द वास्तव में अवस्था को ऊपर नीचे करते हैं।

हनुमान को महावीर भी कहते हैं फिर पूँछ भी दिखाया है और उसी पूँछ से लंका भी जलाते हैं। मैं और मेरे की पूँछ जब तक नहीं जलायेंगे तब तक लंका जलेगी नहीं। तो इस मैं और मेरे को अपने प्रति नोट करें। तो एक अपने ऊपर अटेन्शन रखे, दूसरा - उमंग-उत्साह नहीं गंवाये। तीसरा - हिम्मत नहीं हारे।

अपने चलन और चेहरे द्वारा बाबा को प्रत्यक्ष करने पर बाबा अभी ध्यान खिंचवाता है। हमारे संकल्प में ज्यादा होता है, वाणी में थोड़ा कम फिर सम्बन्ध-सम्पर्क और कर्म में आते हैं तो और कम हो जाता है।

कई कहते हैं हम तो रहते ही योग में हैं, लेकिन हमारा प्रैक्टिकल रूप भी तो दिखाई दे। दूसरे को भी दिखाई दे, इसमें अलग रहने की बात नहीं है लेकिन कारोबार में आते हुए अलग रहें, यह बाबा आजकल चाहता है। कम्बाइण्ड सेवा करो, मन्सा की भी करो, आवाज की भी करो। बाबा ने कहा भले भाषण करते हो, लेकिन भाषण करने से उनको भासना आ जाये, वो कम होती है। अगर मन्सा शक्ति के अनुभव में रहकर वाणी

चला रही हूँ, अगर मैं उस अथॉरिटी के अनुभव में हूँ तो अनुभव करा सकती हूँ।

बाबा ने हमको एक शब्द बोला था कि कभी तुम सेवा करो तो ये नहीं समझो कि मैं स्टेज पर हूँ। मैं स्टेज पर हूँ, पर भाषण कराने वाला बाबा है। हमने जब पहली बार भाषण किया तो सभी ने कहा ये देवियां आयी हैं। आत्मा की खुशी, आत्मा की शक्ति अनुभव हो। भिन्न-भिन्न स्वमान स्मृति में रखने से हमारा चेहरा और चलन बदल सकता है।

बाबा ने कहा था कि ओखली में मुंह डाला है तो मूसल से डर क्यों? वायुमण्डल, प्रकृति, स्टूडेण्ट यह सब तो होना ही है। ऊंची पढ़ाई है तो पेपर भी ऊंचा ही होना है। लास्ट पेपर कितना ऊंचा होगा! पेपर में अनुभवी होते आगे बढ़ते जायेंगे। दूसरा बदले नहीं बदले, अपनी शुभ भावना जरूर रखो। यह जब भावना होगी तो हमारा भी कल्याण हो जायेगा और हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

“राखी के पहले दैहिक वृत्ति को राख बना दो”

हम सब ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण बच्चे संगमयुग पर पवित्रता के अवतार हैं। हमें मन्सा-वाचा-कर्मणा सम्पूर्ण पावन बनना और बनाना है। तो हर एक अपने आपसे पूछो कि हमने अपनी वृत्तियों को, विशेष अपनी मन्सा को कहाँ तक पवित्र शुद्ध बनाया है? अगर अभी तक मेरी प्रकृति में, (कर्मेन्द्रियों में) चंचलता है तो क्यों? मेरी वृत्ति खान-पान में क्यों जाती है? फैशन वा कपड़ों आदि में शौक क्यों है? देह-अहंकार का नशा क्यों है? मन में गुस्सा उठता है तो क्यों? जब बाबा इशारा देते बच्चे अन्तर्मुख हो जाओ फिर भी अन्तर्मुख क्यों नहीं होते? बाबा कहते बच्चे गम्भीर हो जाओ तो भी इशारे को क्यों नहीं समझते? योग में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं? क्यों नहीं शीतल योगी बनते? पढ़ाई में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं?

इन सब प्रश्नों का जवाब यही है कि हमने पवित्रता की शक्ति को, उसके महत्व को पूरा समझा नहीं है। प्युरिटी की शक्ति से दूसरी सब बातें स्वतः समाप्त हो जायेंगी इसलिए सभी इस पर पूरा-पूरा अटेन्शन दो। बाहरमुखता के कारण ही वृत्ति जाती है। बाहरमुखता में आने से ही संग का रंग लगता है और विकारों के वशीभूत होते हैं।

हम सब रक्षक बाप की रक्षा के नीचे बैठे हैं, इसलिए ख्याल चला कि हर एक अपने अन्दर ऐसी विल पावर क्यों नहीं रखते हैं? क्या आप सभी ऐसी चैलेन्ज कर सकते हो कि हम पक्के पवित्र योगी, सर्व कर्मेन्द्रिय-जीत हैं? कोई भी देह की आकर्षण मुझे आकर्षित कर नहीं सकती?

दिखाते हैं कि जगदम्बा काली ने अपने पांव नीचे असुरों को दबाया है। यदि थोड़ी भी बुरी दृष्टि वाला है तो उसको असुर कहा जाता है। उसे एकदम पांव नीचे दबाया, उसका नाम है शिव-शक्ति।

कोई कैसी भी वृत्ति वाला क्यों नहीं आवे, उसकी वृत्तियां सामने आते ही बदल जायें। दुनिया इस बात को मुश्किल समझती और बाबा हमें इसी बात पर विजय प्राप्त कराते हैं।

जो बाल ब्रह्मचारी योगी हैं, वह बड़े नाज़ से कहेंगे, ऐसे बाल ब्रह्मचारियों ने यह रिकार्ड तोड़ा है। तो अपने आपसे पूछो कि क्या हमने कम्पलीट मात्रा में इन विकारी वृत्तियों को जीता है? अगर नहीं तो क्यों? हंसी-मजाक भी क्यों?

आप सभी पक्के योगी रहो - यह है दादी का शुभ संकल्प। एक-एक बाबा का बच्चा चमकता हुआ योगी दिखाई दे। तो खुद की सूक्ष्म चेकिंग करो कि हमारी मन्सा, वाचा सूक्ष्म भी कहाँ है? अगर मन्सा वृत्ति भी किसी देहधारी में जाती है तो राखी के पहले उस वृत्ति को राख बना दो।

हम शूद्र जन्म से मर गये तो फिर हमारे में वह संस्कार क्यों? अभी हमारा जन्म बदल गया, संस्कार बदल गये तब ब्राह्मण बनें। नहीं तो ब्राह्मण ही नहीं कहो। ब्राह्मण माना शीतल काया वाले योगी। जब काम की वृत्ति पूरी नहीं होती है तो गुस्सा निकलता है। दैहिक वृत्ति जाना माना पाप, तो पुण्य आत्मा कब बनेंगे? जो कम्पलीट विजयी हैं उसे ही पुण्य आत्मा कहा जायेगा। तो क्या यह सम्भव नहीं हो सकता? क्या हम ऐसे पावरफुल बनकर विजयी नहीं हो सकते? तो आज से इस संस्कार का अन्तिम संस्कार कर दो। सम्भव है या नहीं? हम सब विजयी रत्न हो जाएं।

जब हम सबका वायदा है - मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई, तो क्या इसी वायदे प्रमाण हम स्वयं को सब बातों से, सर्व आकर्षणों से मुक्त नहीं कर सकते हैं? किसी देहधारी से विशेष आकर्षण है तो क्यों? कई बार चलते-चलते यह माया

ऐसा सूक्ष्म वार करती है, एक दो से ऐसा लगाव हो जाता, जो उससे मिलने, बात करने, लेन-देन करने बिना रह नहीं सकते। इससे योगीपन के लक्षण नज़र नहीं आते, वायुमण्डल बिगड़ता है, लोग शक की नज़र से देखते हैं। बाबा कहते बच्चे, अब इन सब पुराने खातों को, संस्कारों को, योग की अग्नि में स्वाहा कर स्वयं को सम्पूर्ण पावन सतोप्रधान न्यारे और प्यारे बनो। बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनो।

तो आओ हम सभी मिलकर इस रक्षाबन्धन पर ऐसी दृढ़ता सम्पन्न शुभ संकल्प की राखी बांधें और पवित्रता के बल से विश्व को पावन बनाने की सेवा करें।

इसके लिए हर एक अपनी सूक्ष्म चेकिंग करे कि -

- 1- अब घड़ी तक मेरी मन्सा, वाचा कितने परसेन्ट प्युअर बनी है?
- 2- अगर कोई हार है तो मेरी प्रकृति के अनुकूल किस प्रकार

की वीकनेस है? दृष्टि, वृत्ति, संकल्प, स्वप्न, प्रकृति कितना चंचल है? अपनी परसेन्टेज चेक करो।

- 3- अगर सूक्ष्म में भी विकारी भावनायें हैं तो क्या यह महसूस होता है कि यह पाप है और इसे भस्म करना जरूरी है?
- 4- मैं आज से इस अपवित्रता के अंशमात्र को भी 100 प्रतिशत भस्म करता हूँ - क्या यह वायदा अपने आपसे कर सकते? या सोचते हैं कोशिश करेंगे? पुरुषार्थ करेंगे?
- 5- क्या किसी देहधारी की आकर्षण अपनी ओर विशेष आकर्षित करती है? व्यक्ति विशेष के प्रति कितना समय व्यर्थ जाता है?

इस रक्षाबन्धन पर सभी ऐसी सूक्ष्म चेकिंग कर अपने आपसे प्रतिज्ञा की ऐसी पक्की राखी बांधो जो मन्सा से भी अपवित्रता का नामनिशान समाप्त हो जाए। अच्छा - ओम् शान्ति।

कार्यशाला - "अटेन्शन प्लीज" (आपस में रूहरिहान)

(अटेन्शन माना क्या? किन-किन बातों का अटेन्शन रखना है?)

- * अटेन्शन माना हर प्रकार की टेन्शन से दूर।
- * अटेन्शन माना स्वयं पर पहरा देना।
- * अटेन्शन माना ईश्वरीय मर्यादाओं पर ठीक-ठाक से चलते रहना।
- * अटेन्शन माना अन्तर्मुखता की गुफा में रहना।
- * अटेन्शन माना एवररेडी रहना, घर जानें के लिए।
- * अटेन्शन माना एकाग्रता में रहना।
- * अटेन्शन माना ट्राफिक कंट्रोल पर ध्यान।
- * अटेन्शन माना मुरली के समय अटेन्शन।
- * अटेन्शन माना मन बुद्धि का बैलेंस।
- * अटेन्शन माना कन्ट्रोलिंग पॉवर और रूलिंग पॉवर।
- * अटेन्शन माना एक्टिव, एलर्ट और एक्यूरेट।
- * अटेन्शन माना शान्त में रहना।
- * अटेन्शन माना बिन्दुरूप में रहना।
- * अटेन्शन माना ड्रामा पर अटल रहना।
- * अटेन्शन माना सेफ्टी में रहना।
- * अटेन्शन माना व्यर्थ बातों से, साधारण, निगेटिव बातों से मुक्त।
- * अटेन्शन माना आगे बढ़ना।
- * अटेन्शन माना दिनचर्या पर ध्यान।
- * अटेन्शन माना ब्रह्माबाबा को फॉलो करना।
- * अटेन्शन माना अमृतवेला मिस न करना।

- * अटेन्शन माना टीचर के पहले क्लास में आना।
- * अटेन्शन माना मुरली पर मंथन करना।
- * अटेन्शन माना याद में भोजन बनाना और खाना।
- * अटेन्शन माना कर्मयोग पर अटेन्शन।
- * अटेन्शन माना कर्मेन्द्रियों पर अटेन्शन।
- * अटेन्शन माना कर्मेन्द्रियों पर पूरा कन्ट्रोल दिव्य गुण धारण करना।
- * अटेन्शन माना हद की बातों से उपराम।
- * अटेन्शन माना आचार विचार व्यवहार में पवित्रता।
- * अटेन्शन माना अटेन्शन से चारों सबजेक्ट में अटेन्शन।

ऐसा अटेन्शन रखने से फायदे

सफलता मूर्त, जीवन में भरपूरता का अनुभव करते, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, बाप की आशाओं को पूर्ण कर सकते हैं। मायाजीत प्रकृतिजीत बन जाते हैं। परिस्थितियाँ बदल जाती हैं। दिल पसंद, बाप पसंद, लोक पसंद बन जाते हैं। सही समय निर्णय शक्ति, परखने की शक्ति काम करती है। आप समान बना सकते हैं। अतीन्द्रिय सुख की खुशी, समय-संकल्प-श्वास सबकी बचत, दिव्य गुणों से भरपूर, ज्ञान रत्नों से भरपूर, हर बात में अटेन्शन, रूहानी रूहाब में रहते, मर्यादा पुरुषोत्तम विकर्माजीत बन जाते हैं, आलस्य अलबेलेपन से मुक्त हो जाते हैं। अच्छा। ओम् शान्ति।